शोध सारांश

(25)

प्रथम अध्याय में शोधार्थी द्वारा उत्तर प्रदेश का परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। भारतीय राजनीति में उत्तर प्रदेश जनसंख्या की दृष्टि से, 80 लोकसभा सदस्यों और जागरुक मतदाताओं के कारण अहम स्थान रखता है। अध्याय में राज्यपाल की शक्तियों का भी उल्लेख किया गया है जिससे यह समझाा जा सके कि प्रदेश की राजनीति में राज्यपाल की भूमिका किस प्रकार सहायक और सहयोगी रहती है। अध्याय में अध्यायीकरण का लेखन भी किया गया है जिससे यह समझा जा सके कि अध्यायों का विभाजन शोध की दृष्टि से किस प्रकार किया जाए।

शोध का द्वितीय अध्याय साहित्य समीक्षा रखा गया है। साहित्यिक समीक्षा में अनेक राजनीतिक विद्वानों द्वारा प्रतिपादित अनेकों पुस्तकों का उल्लेख किया गया है।

शोध के तृतीय अध्याय में गठबंधन के सैद्धान्तिक पक्ष को समझने का प्रयास किया गया है जिसमें गठबंधन का अर्थ, गठबंधन से अभिप्राय, गठबंधन की आवश्यकता, गठबंधन सरकार की उत्पत्ति के कारणों को समझने का प्रयास किया गया है।

गठबंधन राजनीति के सिद्धांतों को विभिन्न राजनीतिक चिन्तकों के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों के आधार पर समझने का प्रयास किया गया है। जिसमें विलियम एच. रिकर, माईकल लियर्शन,लारेंश सी. डॉड, अब्राहम डी. स्वान, थयोरडोर कैपलो, विलियम गैमसन जैसे प्रमुख राजनीतिक चिन्तक शामिल है।

अगला चतुर्थ अध्याय में भारतीय राजनीति का सांस्कृतिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य जानने के लिए प्राचीनकाल,मध्यकाल और समकालीन राजनितिक व्यवस्थाओं का अध्ययन किया गया है। इन कालखण्डों में गठबंधन राजनीति का प्रयोग कब–कब और किस आधार पर किया गया है तथा प्राचीनकाल की राजनीतिक व्यवस्था मे शामिल राजनीतिक परिवर्तनों का उदाहरण भी इसमें प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन से पता चलता है कि प्राचीनकाल के गठबंधन धर्म आधारित होते थे और वह धर्म की रक्षा के लिए बनाये जाते थे जिनमें त्याग और समर्पन का भाव देखने को मिलता है और राजनीति मे शामिल लोग सत्य का मार्ग चुनते थे।अध्याय में मध्यकालीन राजनीति में किए गए गठबंधन प्रयोगों को समझने का प्रयास किया गया है। यह कालखण्ड मुगलों और हिन्दुत्व राजनीति पर आधारित है।अध्याय में गठबंधन का समकालीन परिप्रेक्ष्य का अध्ययन प्रस्तुत है जिसमें राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन, लखनऊ पैक्ट, गाँधी इरविन संधी, से समकालीन गठबंधन तक का अध्ययन प्रस्तुत है।

Santosh
19/02/2021

शोध के पंचम अध्याय के लेखन में भारतीय राजनीति के केन्द्रीय पक्ष का विश्लेषण किया गया है। जिसमें अध्ययन पश्चात् पता कि भारतीय राजनीति में गठबंधन राजनीति की शुरूआत 1960 में सम्पन्न हुए केरल में सर्वप्रथम देखने मे आई तदोपरांत 1967 के चौथे आम चुनावों में बहुत से प्रदेशों पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, मद्रास और केरल में गैर कांग्रेसी दलों की सरकार के निर्माण के साथ हुई। किन्तु वास्तविक उभार 1989 और 1990 के दशक में ही देखने को मिलता है। जब अल्पावधि के लिए निर्मित गठबंधन सरकारों की कमजोरी और उनके फेरबदल से भारतीय राजनीति प्रभावित हुई। इस प्रकार अध्याय मे 1967 से 2019 तक के कालखण्डों का अध्ययन किया गया है।

शोध के छष्टम अध्याय के लेखन में उत्तर प्रदेश की राजनीति का विश्लेषण किया गया है जिसमें उत्तर प्रदेश में कांग्रेस के पतन का कारण बहुदलीय राजनीति और कांग्रेस की अंतर्कलह को दर्शाया गया है। भारत के कुछ राज्यों में संविद सरकारों का गठन हुआ। केन्द्रीय स्तर पर यह प्रयोग बहुत ज्यादा सफल नहीं रहा क्योंकि भारत में संस्कृति के एक्य के कारण जो वैविध्य पनपता है वह वैविध्य अन्त में उसी एक्य में समाविष्ट भी हो जाता है और गठबंधन हमारी उसी संस्कृति का ही परिणाम है। उसी परिलक्षण के फलस्वरूप (राज्य और केन्द्र में) समय समय पर गठबंधन की सरकारों का प्रयोग हुआ है। भारतीय संस्कृति के अनुरूप पहली बार राजनीतिक प्रयोग सफल होने शुरू हुए। उन प्रयोगों से उत्तर प्रदेश भी अछूता नहीं रहा। इस प्रकार 1967 से लेकर 2017 तक उत्तर प्रदेश में गठबंधन सरकारों के अनेक प्रयोग हो चुके हैं। प्रस्तुत शोध में इसी दृष्टिकोण से अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

अगला अध्याय निष्कर्ष शोध का अंतिम अध्याय है इस अध्याय के लेखन में शोधार्थी द्वारा शोध का सम्पूर्ण विश्लेषण करने के पश्चात् निकले निष्कर्ष का लेखन किया है शोध के निष्कर्ष में शोधार्थी ने उत्तर प्रदेश की राजनीति को १९९० से २०१७ के प्रमुख कालखंड के आधार पर समझने का प्रयास किया है जिससे पता चलता है की उत्तर प्रदेश की राजनिति जातिवाद ,धर्मवाद,क्षेत्रवाद से अलग विकासवाद की ओर अग्रसर है क्यूंकि २०१७ के विधानसभा चुनाव का जनादेश भाजपा के पक्ष में पूर्ण बहुमत से अधिक जाना इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

Santosh
19/02/2021